Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 20, Issue No. 2, April-2023, ISSN 2230-7540

अकबर और मुगल राज्य व्यवस्था के विकास का अध्ययन

Sangita Jha[1]*, Dr. Nandkishor[2]

[1] Research Scholar, Capital University, Koderma

[2] Professor, Capital University, Koderma

सार - अकबर का शासन मुग़ल साम्राज्य की व्यवस्था के विकास का महत्वपूर्ण पारिप्रेक्ष्य था। उन्होंने तंत्रीकृत शासन पद्धति को अपनाया और धर्मिक सहमति को प्रोत्साहित किया। उनका सम्राज्य प्रशासकीय और सामाजिक सुधारों का केंद्र था, जिसने साम्राज्य की समृद्धि और सांस्कृतिक विकास को प्रोत्साहित किया। उनकी राजनीतिक दक्षता, धार्मिक सहमति की कवायद, और विभिन्न सामाजिक वर्गों के साथ समझबूत संबंधों ने उनके शासनकाल को एक समृद्धि और सांस्कृतिक उत्थान के रूप में बनाया।

खोजशब्द - मुगल, अकबर

----------X----------

परिचय

मुगल साम्राज्य 1556 में अपने सम्राट हुमायूँ की आकस्मिक मृत्यु के बाद संकट के एक नए चरण में प्रवेश कर गया, जो पिछले वर्ष दिल्ली पर फिर से कब्ज़ा करने में कामयाब रहा था, जो कि घमंडी कुलीनता के कारण मुगल नियंत्रण से खो गया था, जैसा कि पहले ही चर्चा की जा चुकी है। इस समय मुगल सिंहासन सुरक्षित नहीं था, कई आंतरिक और बाहरी शत्रु आक्रमण के अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। हुमायूँ का पुत्र अकबर, केवल चौदह वर्ष का था, और, उत्तराधिकार के एक निश्चित कानून की अनुपस्थिति का मतलब था कि उसके चाचा सिंहासन के लिए अपने दावों को प्रभावित कर सकते थे। अकबर को अपने पिता और दादा से विरासत में मिली मुगल कुलीनता मुख्य रूप से तुरानी थी अर्थात तुर्क), लेकिन पूरे मध्य एशिया में लागू होती है। हालाँकि(, हुमायूँ के समय तक कुलीन वर्ग की नस्लीय संरचना में कुछ फ़ारसी भी शामिल थे, लेकिन कुलीन वर्ग पर तुरानियों का प्रभुत्व था। तूरानी अपनी चंचलता और फितना अरबी शब्द जिसका /एक फारसी) इस्तेमाल राजद्रोह, विद्रोह, मतभेद, अराजकता और इसी तरह का वर्णन करने के लिए किया जाता हैके लिए जाने (जाते थे। हालाँकि, यह बैरम खान, एक फ़ारसी कुलीन और अकबर का अटालिघ था (अभिभावक/शिक्षक), शायद वरिष्ठ रईसों की सहमति से, जिसने अकबर को दक्षिण एशिया में मुगल प्रभुत्व का सम्राट घोषित किया था। उनके हाथ चंगेज खान के कानूनों से बंधे थे, जिन्हें 'यासा' कहा जाता था। इन कानूनों ने कुलीन वर्ग को वंशानुगत विशेषाधिकार प्रदान किये। आईए खान के अनुसार, शुरुआती मुगल इन कानूनों का पालन करने के लिए उत्सुक थे। इस संदर्भ में, जैसा कि पहले चर्चा की गई है, 1550 के अंत में कुलीन वर्ग की शक्ति को समझा जा सकता है। तिमुरिड ने सूर्य के नीचे किसी भी चीज़ पर यासा को प्राथमिकता दी, यहां तक कि मुस्लिम कानून की भी सीमित (शरीयत)भूमिका थी। लेकिन मुस्लिम कानून वहां मौजूद था, और इसलिए, चाहे यासा के कारण हो या शरीयत के कारण, यह बिल्कुल स्पष्ट है कि मुगल व्यवस्था में कुछ अंतर्निहित तत्व थे जो 'संप्रभु' की शक्ति को कमजोर बनाते थे। इस बहस में, अलीगढ़ विचारधारा के मजबूत प्रभाव के तहत, सभी स्पष्टीकरण मुगल संप्रभुता और रईसों की स्थिति दोनों को दूरसंचार शर्तों में समझाने की प्रवृत्ति साझा करते हैं। परिणामस्वरूप, अकबर द्वारा विरासत में मिली और बाद में विकसित मुगलिया राजनीति के कुछ अन्य महत्वपूर्ण तत्वों और बारीक बारीकियों को नजरअंदाज कर दिया गया है। अकबर के शुरुआती वर्षों में मुगल दरबार की राजनीति के वर्तमान शोध प्रबंध विश्लेषण का निष्कर्ष

www.ignited.in

तुर्कमंगोल राजत्व के विकास के एक रैखिक मॉडल का - पुनर्मूल्यांकन है।

'खून' बनाम का टकराव *दूध*; कुलीनता और केंद्रीय सत्ता का कमजोर होना .डी.ए)1556-1560)

पिछले अध्ययन में पहले ही इस बात पर प्रकाश डाला जा चुका है कि 'रक्त' के सिद्धांत ने 1526-1556 तक मुगल सम्राटों के अधिकार के लिए गंभीर समस्याएं पैदा कीं। वे सभी जो बाबर के शासक घराने के साथ रक्त संबंध का दावा कर सकते थे या यहां तक कि तैमूर या चंगेज खान के समान वंश का दावा कर सकते थे, उन्होंने मुगल सम्राटों के अधिकार की अवहेलना की। इस दुर्दशा को हाल के मॉडेम कार्यों में अच्छी तरह से प्रलेखित किया गया है, जो इस घटना को मध्य एशिया में बताता है और बताता है। इस सन्दर्भ में यह तर्क अच्छी तरह समझ में आता है। हालाँकि, अकबर के शासनकाल के प्रारंभिक काल के दौरान स्रोत सामग्री के एक सूक्ष्म विश्लेषण से पता चलता है कि अमीरों के एक समूह का समान प्रभुत्व था, जिनका मुगल शासक घराने के साथ कोई रक्त संबंध नहीं था। अकबर के पालक मातापिता वाले इस समूह को अटका खैल के नाम से जाना - जाता था। इस समूह के हित कुलीन वर्ग के समूह के साथ संघर्ष में थे, जो सम्राट के साथ समान रक्त संबंध का दावा करते थे और 1556-1560 के बीच और कुछ हद तक 1568 तक संघर्ष हुआ, जिससे अकबर की 'संप्रभु' स्थिति कमजोर हो गई। इस दृष्टिकोण से समझाने का प्रयास किया गया।

इस प्रकार, अकबर शासनकाल के शुरुआती वर्षों के दौरान (समसामयिक और निकट समकालीन दोनों खातों) मुगल स्रोतों की बारीकी से और ताजा जांच से पता चलता है कि'संप्रभु' की स्थिति को कमजोर करने के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव डालने वाले दो समूहों के अस्तित्व का पता चलता है।

ये समूह थे नर्स और उनके रिश्तेदार-वेट (ए), जिन्हें 'फोस्टर बटालियन {अटका खैत' भी कहा जाता है और रक्त (बी) रिश्तेदार या तिरानी रईस।

अबुल फज़ल और बदायूँनी दोनों के विवरण से ऐसा प्रतीत होता है कि बैरम खान)1556-1560 ईके शासनकाल के (. दौरान, 'रक्त के अभिजात वर्ग' और 'दूध के अभिजात वर्ग' के बीच राजनीतिक प्रभुत्व के लिए लगातार संघर्ष होता रहा। मंगोल रीति रिवाजों के प्रति मुगल श्रद्धा ने वंशानुगत-कुलीन वर्ग को विशेषाधिकार प्राप्त दर्जा दिया। (तुरानी) हालाँकि, तुलना में, मुस्लिम परंपरा में अंगा (नर्स-वेट)को अत्यधिक महत्व दिया गया था। एक ही वेटनर्स साझा - करने वाले बच्चों को'दूधबहन-भाई-' माना जाता था। जुड़ाव के इन बंधनों ने सम्राट के 'दूध रिश्तेदारों' को अधिकार की अत्यधिक और राजनीतिक रूप से खतरनाक भावना प्रदान की।

कुलीनता की शक्तियों पर अंकुश लगाना

अपने शासक बैरम खान को बर्खास्त करने के दो साल बाद, अकबर ने अंबर के कच्छवा राजपूतों के राजा भर माई की बेटी से शादी करके, हिंदुस्तान के बहादुर राजपूत समुदाय के साथ वैवाहिक गठबंधन की श्रृंखला को औपचारिक रूप दिया, एक ऐसी घटना जो अभूतपूर्व थी। इन वैवाहिक गठबंधनों के माध्यम से अकबर अपने कुलीन वर्ग में एक शक्तिशाली और अधिक महत्वपूर्ण रूप से एक वफादार समूह की भर्ती करने में कामयाब रहा। राजपूतों के अलावा कई फ़ारसी सरदारों को भी भर्ती किया गया। यह तर्क आईद्वारा दिया गया है। खान के अनुसार .ए., अकबर के कुलीन वर्ग में गैरतुरान-ी तत्व की भर्ती अकबर द्वारा एक सुविचारित राजनीतिक कदम था। इस अधिनियम के माध्यम से, उन्हें न केवल राजपूतों का समर्थन प्राप्त हुआ बल्कि तूरानी सरदारों द्वारा उत्पन्न समस्याओं का भी मुकाबला किया गया।

सूक्ष्म शोध पर आधारित उत्कृष्ट तर्क को चुनौती दिए बिना, मैं हिंदू राजपूतों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित करने के लिए एक और प्रशंसनीय स्पष्टीकरण सामने रखूंगा। यह तर्क सहायक है और एलखान के अध्ययन .ए. के अतिरिक्त है।

यहां यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि महम अंगा द्वारा उत्पन्न समस्याओं से पहले भी, अकबर को एक अन्य महिला से सिंहासनारूढ़ होने के तुरंत बाद अपने अधिकार के लिए एक गंभीर चुनौती का सामना करना पड़ा था। हुमायूँ की मृत्यु पर बदख्शाँ के शासक मिर्जा हुमायूँ ने विद्रोह के संकेत दिये। यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि अकबर के शासनकाल के आधिकारिक इतिहासकार अबुल फ़ाज़ी ने इस विद्रोह के लिए मिर्ज़ा सुलेमान की पत्नी हरम बेगम को जिम्मेदार ठहराया, जिन्हें खुर्रम बेगम के नाम से भी जाना जाता है। अबुल फजल लिखते हैं कि मिर्जा सुलेमान ने खुर्रम बेगम को अपने ऊपर शासक बना लिया और उनकी सलाह के बिना कोई भी व्यवसाय नहीं कर सकते थे। मिर्ज़ा की यह पत्नी बदख्शां के एक हिस्से को दूसरे हिस्से की तुलना में पसंद कर रही थी, जिसके

www.ignited.in

कारण उसके खिलाफ प्रतिक्रिया हुई। हरम बेगम बदख्शाँ छोड़कर काबुल आ गयी और हुमायूँ के हरम में शामिल हो गयी। अबुल फज़ल लिखते हैं, "उसने अपनी अल्प बुद्धि और दुष्ट आत्मा में काबुल की बाहरी स्थिति को देखा था और उस पर कब्ज़ा करने का संकल्प लिया था। उसने मिर्ज़ा सुलेमान के सामने इसे एक आसान उपक्रम के रूप में पेश किया और उसे युवाओं को बहुत परेशान करते हुए काबुल पर आक्रमण करने के लिए मजबूर किया।सम्राट अकबर। " हरम बेगम और काबुल प्रांत फिर स े अकबर के लिए परेशानी का सबब बन गए जब हरम बेगम ने अलग तरह से राजनीति करना शुरू कर दिया, अब उसके पति मिर्जा सुलेमान के कारण, जो मिर्जा कामरान की विधवा से शादी करना चाहता था लेकिन हरम बेगम ने उससे शादी कर ली। मिर्ज़ा इब्राहिम, विधवा की इच्छा के विरुद्ध उसका बेटा। मिर्ज़ा इब्राहिम को बाद में मिर्ज़ा कामरान की विधवा से मिर्ज़ा शाहरुख नाम का एक बेटा हुआ। मिर्ज़ा इब्राहिम की मृत्यु के बाद, उनकी पत्नी मुहतरिम खानिम ने मिर्ज़ा शाहरुख को अपने दादा मिर्ज़ा सुलेमान के खिलाफ विद्रोह करने के लिए उत्साहित किया, जिससे उसने किया।

प्रशासन का पुनर्गठन; मनसबदारी प्रणाली

हिंदू राजपूतों के साथ वैवाहिक गठबंधनों और पालक बटालियन को अलगअलग स्थानों पर फैलाने के बावजूद-, अकबर अपने प्रशासन को पुनर्गठित किए बिना महत्वाकांक्षी कुलीन वर्ग को व्यापक रूप से अपने अधीन नहीं कर सका, विशेष रूप से सेना जो मनसब प्रणाली, या राजस्व के असाइनमेंट पर निर्भर थी और पद प्रदान करनाअब्दुल . अजीज के अनुसार:

> मनसब, हालांकि मुख्य रूप से एक सैन्य रैंक था, वास्तव में उन शर्तों का गठन करता था जिसमें आधिकारिक पदानुक्रम और संयोगवश सामाजिक स्थिति व्यक्त की जाती थी। मनसब का अर्थ अपने आप में कोई विशेष पद नहीं होता। कभीकभी मनसब प्रदान करना किसी व्यक्ति को - मान्यता के माध्यम से आय के स्रोत प्रदान करने के बराबर होता था; यह पूरी तरह से पेशेवर सेवाओं या कौशल का हो सकता है जैसे कि एक) चिकित्सक या कवि का।

अब्दुल अज़ीज़ द्वारा सुझाए गए सुझाव से आगे बढ़ते हुए, हम संभवतः यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि, सबसे पहले मनसब एक सैन्य रैंक था, और दूसरे यह सामाजिक और आधिकारिक पदानुक्रमों को बनाए रखने के लिए भी काम करता था। लेकिन फिर सवाल उठता है कि अकबर को 1574-75 में मनसब व्यवस्था क्यों लागू करनी पड़ी। बैरम खान के सत्ता से बेदखल होने के बाद अकबर के शासनकाल के पहले 15 वर्षों के विस्तृत विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि 1574-75 में मनसब प्रणाली की शुरूआत, निश्चित रूप से, अपने महत्वाकांक्षी कुलीन वर्ग की शक्तियों को और कम करने के लिए अकबर की चतुराई भरी रणनीति थी। ग्रेनो का उद्देश्य अपने राजस्व और राजकोषीय मामलों को सुव्यवस्थित करना है।

'संप्रभु' की स्थिति का प्रतीकवाद, समर्पण और उन्नयन

अकबर को दक्षिण एशिया में मुगल साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। उन्होंने जो नीतियां बनाई और क्रियान्वित कीं, उन्होंने उन्हें कई समूहों के निहित स्वार्थ से अपने सिंहासन और साम्राज्य की रक्षा करने में सक्षम बनाया। उनकी लगभग सभी नीतियाँ 1560 में बैरम खान की रीजेंसी की समाप्ति के बाद शुरू हुईं।

बैरम खान की मृत्यु के बाद का एक दिलचस्प प्रसंग इस परिकल्पना की पुष्टि करता है कि अकबर कई प्रतीकात्मक कृत्यों के माध्यम से 'संप्रभु' की स्थिति को ऊपर उठाने की कोशिश कर रहा था। यह बैरम खान की विधवा के साथ अकबर का विवाह था।

रूबी लाई के अनुसार, अकबर ने मुगल दरबार के करीबी लोगों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और वफादारी साबित करने के लिए बैरम खान की विधवा से शादी की। हालाँकि, बैरम खान के निष्कासन और बाद में हत्या की परिस्थितियाँ रूबी लाई की परिकल्पना का समर्थन नहीं करती हैं। बैरम खान को हटाना आसान नहीं था, क्योंकि 1560 तक बैरम खान ने काफी ताकत हासिल कर ली थी और उसे शक्तिशाली उज़्बेक कुलीन वर्ग का भी समर्थन प्राप्त था। और यह भी बता दें कि अकबर धीरेधीरे - संप्रभुता ग्रहण करते समय सतर्क था। उनकी चालें अंततः उनके भाग्य का फैसला करेंगी, और बैरम खान के खिलाफ कोई भी चाल किसी युद्ध से कम नहीं थी। यहां तक कि जब अकबर ने संप्रभुता संभाली और बैरम खान जीवित था तब भी सम्राट के मन में तख्तापलट की आशंकाएं थीं। बैरम खान की हत्या ने अकबर की अंतिम जीत को चिह्नित किया, और, बैरम खान की विधवा के साथ उसका विवाह उसकी पूर्ण जीत और 'संप्रभु' स्थिति को दिखाने के लिए एक प्रतीकात्मक कार्य था।

www.ignited.in

सशक्त राजशाही की अवधारणा का विकास

मुगल साम्राज्य को केंद्रीकरण और मजबूत राजशाही की अवधारणा देने वाले अकबर की प्राप्त छवि का श्रेय उनके गुरु, साथी और इतिहासकार अबुल फज़ल को जाता है। अपने कार्यों अकबरनामा और इसके भारी और विस्तृत परिशिष्ट ऐनअकबरी के माध्यम से-ए-, अबुल फज़ल ने अकबर को दैवीय व्यक्ति के रूप में पेश किया और फ़ारसी राजत्व की प्राचीन लेकिन मजबूत अवधारणा का परिचय दिया। व्यावहारिक कार्यों के साथसाथ अबुल फज़ल के - सैद्धांतिक इनपुट दोनों के माध्यम से अकबर मजबूत राजशाही की अवधारणा को पुनर्जीवित करने में सक्षम था, जिसने उसे न केवल लगभग आधी शताब्दी तक शासन करने में मदद की, बल्कि अपनी संतान द्वारा उस शासन को एक और शताब्दी तक बनाए रखने में भी मदद की। ऐसा करने में न केवल तिमुर बल्कि सभी मंगोलों की महान मां एलनक्वा की वंशावली के आधार पर शासन करने की उनकी वैधता पर प्रकाश डाला गया।

बाबर की तरह, अकबर ने भी अपने शासनकाल के आरंभ से ही, विशेष रूप से राजस्वअनुदान दस्तावेजों में-, एक मुहर का उपयोग किया था, जहां, सर्कल के किनारे पर, उसकी वंशावली का पता तैमूर से लगाया गया था, और इरफ़ान हबीब ने इस आशय के पर्याप्त सबूत एकत्र किए हैं। यह आरिफ कंधारी थे जिन्होंने अकबर को विशेष रूप से तैमूर के लिए आरक्षित साहिबए क़िरान की उपाधि देने में संकोच - नहीं किया। अबुल फज़ल एक कदम आगे बढ़ते हैं और अकबर की कुंडली की तुलना तैमूर से करते हैं, बाद वाला तुलना का एक पैमाना पेश करता है जिससे यह दावा किया जाता है कि यह तैमूर की तुलना में अधिक उपलब्धि का संकेत देता है। इसलिए अकबरनामा में एक अध्ययन उपयुक्त रूप से तैमूर की उपलब्धियों के लिए समर्पित था, जो स्पष्ट रूप से यज़्दी पर आधारित एक संक्षिप्त लेकिन सावधानीपूर्वक इतिहास प्रदान करता था। एक महत्वाकांक्षी परियोजना तारिखए खान-, दानए तिमुरिया भी शुरू की गई - थी जिसके तहत न केवल तैमूर, बाबर और हुमायूँ के कार्यों को शब्दों में उजागर किया गया था, बल्कि चित्रित भी किया गया था। अकबर की स्थिति और स्थिति को ऊंचा करने के प्रयास में वंशावली संबंधों पर जोर देते हुए, अबुल फाज़ी ने अपने वंश को शाही मंगोलों की मां, पौराणिक एलनक्वा से जोड़ा।'*'*" और यदि वंश इतना ऊंचा है तो अकबर को एक आदर्श व्यक्ति और राजा इंसानकामिल -ए- के रूप में चित्रित करने का प्रयास स्पष्ट था।

यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि अबुल फज़ल के मन में राजशाही की कुछ अवधारणा थी, जो स्वाभाविक रूप से उनके लेखन में तैरती रही। यह अवधारणा सम्राट को प्रभुत्व और लोगों के लिए केंद्रीय और निरपेक्ष मानती है। अबुल फज़ल कल्पना, यहाँ तक कि इशराक़ परंपरा की शब्दावली का भी उपयोग करता है, जब वह आध्यात्मिक प्रकाश प्राप्त करने वाली वस्तुओं के पदानुक्रम में लौकिक संप्रभुता को सर्वोच्च स्थान पर रखता है।:

> अद्वितीय सर्वशक्तिमान के लिए पादशाह रॉयल्टी से बढ़कर कोई पद नहीं है, यह अद्वितीय सर्वशक्तिमान की एक रोशनी है और विश्व को रोशन करने वाले सूर्य की एक किरण है, जो पूर्णता की पुस्तकों का सार है, उत्कृष्टताओं का संयोजन है। आजकल की भाषा में इसे फर्र-ए- कहा जाता है। (दिव्य प्रकाश) इज़ादी.

दैवीय प्रकाश या चमक की प्राप्ति के रूप में राजाओं की अवधारणा एक प्रसिद्ध प्राचीन ससैनियन परंपरा और अवधारणा है, जो ससैनियन राजाओं को पूर्ण अधिकार प्रदान करती थी और उनकी स्थिति और स्थिति को बाकी सभी से ऊपर उठाती थी, और जाहिर तौर पर अबुल फज़ल भी उस अवधारणा पर भरोसा कर रहे थे। जिससे अकबर की स्थिति मजबूत हो सके। फर्र की कल्पना ऊपर से दिए गए आशीर्वाद के रूप में की गई थी, आमतौर पर धन और मुआवजे की देवी असि द्वारा। ऐसा प्रतीत होता है कि मूल रूप से इसका अर्थ देवताओं द्वारा मनुष्यों को दी गई अच्छी चीजें थीं", लेकिन यह अवधारणा एक देवता के रूप में भी प्रचलित थी। एक दैवीय उपहार के रूप में, यह देवताओं द्वारा इष्ट पुरुषों और महिलाओं के साथ था और इसने उन्हें शक्ति और समृद्धि प्रदान की। ज़मायद यश्त, हालांकि पृथ्वी को समर्पित है, वास्तव में देवताओं, पैगम्बरों और ईरानी मिथक और किंवदंती के महान नायकों के पास मौजूद फर्र का जश्न मनाता है।

फर्र ईरानी परंपरा की सबसे स्थायी अवधारणाओं में से एक है और राष्ट्रीय इतिहास में इसका प्रमुख स्थान है। इसके बिना कोई भी राजा सफलतापूर्वक शासन नहीं कर सकता था। फर्र के बल पर ही ताकतवरों ने प्रसिद्धि और गौरव हासिल किया। इसकी उपस्थिति सफलता लेकर आई और 'वैधता' का प्रतीक बनी। इसकी अनुपस्थिति ने पुरुषों के भाग्य को बदल दिया, जो दैवीय अप्रसन्नता का संकेत देता है और अक्सर आसन्न पतन या हार का संकेत देता है।

www.ignited.in

ऐसा प्रतीत होता है कि अबुल फजल अकबर को फर्र या दैवीय कृपा प्राप्तकर्ता के रूप में चित्रित करके न केवल ईरानीससैनियन राजत्व के मॉडल पर जोर दे रहा था/, बल्कि उसे 'वैधता' के बजाय उसकी संतान बनकर शासन करने के लिए दैवीय 'वैधता' प्रदान करने का भी प्रयास कर रहा था। तैमूर और चिंगगिसयह शायद सबसे सुरक्षित और . सबसे मजबूत तरीका था जिससे अकबर खुद को न केवल अमीरों से बल्कि पूरी मानव जाति से ऊपर खड़ा कर सकता था।

1556-1575 तक अकबर ने अमीरों के सामने आने वाली समस्याओं का मुकाबला करने के लिए विभिन्न रणनीतियाँ अपनाईं और अपनी स्थिति को 'संप्रभु' के रूप में ऊपर उठाने के लिए सावधानीपूर्वक योजना बनाई।

निष्कर्ष

अकबर के कार्यों और कथनों के उसके लिखित दस्तावेज़ ने उसे एक दिव्य प्राणी के रूप में पेश किया। मध्य एशिया के साथ संबंध टूटे नहीं तो सीमित थे। इस्लामी परंपरा और प्रथा का भी यही हाल था। ऐसे कुछ संदर्भ हैं जिनमें अकबर ने यासा के साथ कुछ संबंध प्रदर्शित किए थे और ये स्वयं राजनीतिक रणनीतियों से कम नहीं थे। इसके बजाय उनके द्वारा जो प्रयास किया गया वह संप्रभुता की फ़ारसी अवधारणा पर वापस लौटना था जो राजा को मजबूत केंद्रीकरण और पूर्ण शक्ति प्रदान करता था, या प्रदान करता था।

संदर्भ

1. शर्मा, एस :भारत में मुगल साम्राज्य। आगरा .आर . एजुकेशनल पब्लिशर्स, 1934।
2. मुगल साम्राज्य का उत्थान अंत पतन। इलाहाबाद : सेंट्रल बुक डिपो, 1977.
3. रे, सुकुमार। फारस में हिइमायुन। कलकताद : एशियाटिक सोसाइटी, 2002
4. राम, तेजबादुर के नोहानी और फ़ार्मुली अफगानों " . उनके कुलीनता का एक अध्ययन :के साथ संबंध)1526-30)।भारतीय इतिहास कांग्रेस की ") कार्यवाही1980)।
5. प्राउडिन, एममंगोल साम्राज्य ., इसका उदय और विरासत। ईडन और सीडर पॉल द्वारा अनुवादित। लंदनजॉर्ज एलन एंड अनविन लिमिटेड :, 1940।
6. पीयर्स, लेस्ली पीओटोमन :इंपीरियल हरम . :साम्राज्य में महिलाएं और संप्रभुता। ऑक्सफ़ोर्ड ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1994।
7. पांडियन, आनंद एसद इंपीरियल :प्रिडेटरी केयर" . हंट इन मुगल एंड ब्रिटिश\nd\a।जर्नल ऑफ़ " हिस्टोरिकल सोशियोलॉजी14, सं .1 (2001): 79-107.
8. ओ'लानलॉन, रोज़ालिंड। मुगल उत्तर भारत में " जर्नल ऑफ़ इकोनॉमिक "मर्दानगी और शाही सेवा। एंड सोशल हिस्टोइ ऑफ़ द ओरिएंट42, संख्या। 1 (1999)
9. नज्जर, फौजी एमइस्लामिक राजनीतिक दर्शन " . इस्लामिक धर्मशास्त्र और दर्शनशास्त्र "में सियासा। में, एममर्मुरा द्वारा संपादित। अल्बानी .ई., 1984.
10. मुखिया, हरबंस। अकबर के शासनकाल के दौरान इतिहासकार और इतिहासलेखन। नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस, 1976.
11. मॉर्गन, डी.ओद ग्रेट यासा ऑफ़ चंगेज खान " . स्कूल ऑफ "एंड मंगोल लॉ इन द खाननेट। ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज का बुलेटिन49, संख्या। 1 (1986).

Corresponding Author

Sangita Jha*

Research Scholar, Capital University, Koderma

www.ignited.in